Peer Reviewed

ISSN 2319-8648

Indexed (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Oct. 2022 Issue - 60 Vol. 1

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 60 , Vol. 1 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Oct. 2022 | SJIF | Impact Factor : 7.139

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2319-8648

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

Oct. 2022 Issue - 60 Vol. 1

Chief Editor

Mr. Arun B. Godam

Shaurya Publication , Latur

64. लोकशाही संवर्धनात विरोधी पक्षाची भूमिका 206
प्रा. डॉ. सुरेश मखाराम भालेराव

65. भारतीय लोकशाहीसमोरील समकालीन आव्हाने 209
प्रा. डॉ. सुखनंदन ढाले

66. भारतातील राजकीय पक्षांची भूमिका व लोकशाही -एक चिंतन 212
डॉ. लोंढे संदीप गोविंदराव

67. भारतीय लोकशाहीचा तात्विक विचार 214
बांगर परमेश्वर शिवाजी

68. अफगाणिस्तानात लोकशाहीचा अंत होऊन तालिबानी हुकूमशाहीकडे वाटचाल 217
डॉ. रमेश रामराव बैनवाड

69. भारतीय लोकशाहीसमोरील समकालीन समस्या आणि आव्हाने 222
डॉ. बिराजदारएस.एम

70. भारतीय सामाजिक परिवेश और ममकालीन साहित्य में नारी विमर्श 227
डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ

PRINCIPAL
HINGOLI

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue 60 , Vol. 1
Oct. 2022
Peer Reviewed
SJIF
ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

भारतीय सामाजिक परिवेश और समकालीन साहित्य में नारी विमर्श

डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
संशोधक मार्गदर्शक एवं आचार्य हिन्दी विभागाध्यक्ष
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली

शोध सार- साहित्य में नारी के जीवन में व्याप्त घुटन, निराशा, अंधविश्वास, पीडा, दु:ख, संत्रास, सामाजिक द्वंद को बखुबी से चित्रित किया गया है। विभिन्न क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति में बदलाव दिखाई दे रहा है । "साहित्य में नारी चेतना से हमारा आशय यह है कि साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज में नारी जो अशिक्षा, रुढी और अंधविश्वास के कारण शोषन का शिकार बन रहीं है। ऐसे नारी जीवन की अन्याय, आत्याचार की करुन कहानी को वाणी देना , उसे अपने अधिकारों के प्रति जागृत करना, उसके दर्द, घुटन, पीडा, आदि को व्यक्त करना साहित्य के अंतर्गत नारी चेतना के नाम से पुकारा जाता है ।

मुख्य शब्द - दमन, आत्मबोध, शोषन का शिकार ,अशिक्षा, रुढी, अंधविश्वास, अधिकारों के प्रति जागृत करना,दर्द, घुटन, पीडा, आदि।

प्रकृति पुरुष से मिलकर इस विश्व का सृजन हुआ है । भारतीय समाज नारी को भक्ती और शक्ती के रूप में देखता है । उसे दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी इन नामों से जाना जाता है । वही भारत में महिलाओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है । भारतीय समाज में महिलाओं को निम्न दर्जे का नागरीक समझा जाता था। भारतीय समाज में महिलाओं के बारे में अनेक गलत धारणाये पायी जाती है ।भारत में प्राचिन काल से नारी के प्रति देखने की दृष्टि अलग अलग रहीं है । नारी वक्तृत्व कला और विद्वता की परिचायक है। लक्ष्मी और दुर्गा के रूप में अर्थसत्ता और शक्ति की भी वह स्वामिनी थी और 'अर्धनारीश्वर' की कल्पना तो उसके समानाधिकार की भी पुष्टि करती है। बदलते परिवेश में नारी का जीवन भी बदला । कई बार उसे सम्मान मीला तो कई बार उसके सम्मान को ठेस पहुचाई है ।

वैदिक काल: वैदिक काल में महिलाओं को भारतीय समाज में भेदभाव की दृष्टी से नही देखा जाता था । बौध्दीक, सामाजीक, शारीरिक, नैतिक दृष्टी से महिला सबल समजी जाती थी। सब धर्मकी कार्य, उत्सव, शिक्षण इस में महिलाओं का सहभाग था।उत्तर वैदिक काल में उच्च शिक्षण प्राप्त करने के अवसर प्राप्त थे ।मनुस्मृती में मनु ने महिलाओं के लिये जो नियम बनाये उस से महिलाओं का दर्जा समाज में कम होने लगा ।

उत्तर वैदिक काल: द्रविडों की हार के साथ युद्ध क्षेत्र में पकड़ी जाने वाली वीर लड़ाकू द्रविड़ नारियाँ जब आर्य-परिवार में दासियों के रूप में शामिल हुईं तो इनमें से योग्य, गुणी, बहादुर स्त्रियों ने आर्यों के दिल जीत लिए, यहीं से आर्यों में बहु विवाह प्रथा का प्रचलन हुआ, दासी प्रथा भी सामने आयी यहीं से वेदकालीन सभ्यता का द्वितीय चरण आरंभ होता है। इस काल में भी ऊँची जाति में पुरुषों के समान ही स्त्रियों का 'उपनयन संस्कार होता था । आध्यात्मिक ज्ञान और दर्शनशास्त्र की शिक्षा उनके लिए अनिवार्य थी। परंतु यहाँ शिक्षा का स्थानइस काल में नारी को गुरुकुल न होकर परिवार या समाज तक ही सीमित था। शिक्षित स्त्रियाँ ही केवल धार्मिक कार्य करने योग्य समझी जाती थीं । धर्म तथा समाज क्षेत्र में, दर्शन अध्यात्म्य की चर्चा में इतना ही नहीं उच्चस्तरीय विवादों में भी स्त्रियाँ सहभागी होती थीं । उद्दालिका, अंतर्भागा, विदग्धा, अश्वस्ना, गार्गी, मैत्रेयी आदि विदुषियों का उल्लेख उपनिषद् काल में मिलता है। सामान्य स्त्रियाँ खेती का काम देखने, कपड़े बुनने, तीर कमान बनाने आदि कामों के साथ घर-गृहस्थी की देखभाल करती थीं। धीरे-धीरे वर्णव्यवस्था के कारण, बहुपत्नी प्रथा के कारण स्त्रियों की स्थिति में ह्रास होने लगा अर्थात् उत्तर वैदिक काल से ही भारतीय नारी की स्थिति में गिरावट प्रारंभ हो गयी ।

रामायण-महाभारत काल: रामायण और महाभारत में महिलाओं का वर्णन तप, त्याग, नम्रता, पति सेवा आदि गुणों से विभूषित गृहस्वामिनी के रूप में हुआ है। जैसे रामायण में । सीता, अनुसूया आदि नारियों का वर्णन विदुषी रूप में किया गया है। परंतु इसी काल में विधवा-विवाह पर प्रतिबंध लगने आरंभ हो गये । विवाह आयु घट गयी बहुपत्नी प्रथा बढ़ी । कर्तव्य आज्ञापालन

और पतिसेवा ही स्त्रियों का प्रमुख गुण और कर्तव्य हो गया । अनार्य पत्नियाँ संस्कृत भाषा के ज्ञान के अभाव में धार्मिक कार्य में हिस्सा लेने में असमर्थ थी।

बौद्ध काल: इस काल में स्त्रियों के संघ में दीक्षित होते ही धर्म का मूल रूप विकृत हो गया । महायान और वज्रयान में तांत्रिक साधना में नारी का दुरुपयोग किया जाने लगा । इन सम्प्रदायों में अलौकिक शक्तियों की प्राप्ति और उनका प्रदर्शन ही सिद्धि समझा गया । सिद्धि लाभ के लिए गुप्त मंत्रों का जाप, आचारविहीन गुप्त क्रियाओं-बिशेषकर निम्नवर्ग की नारियों से भोग आदि को अपनाया गया। मंदिरों में चौरासी आसनों जैसी मूर्तियाँ इन्हीं की देन हैं। उत्तरोत्तर गिरती हुई नारी की पतनावस्था का ही यह प्रतीक है ।[1]

इस्लामी काल : मध्ययुग में विशेष रूप से भारत पर मुसलनाओं के आक्रमणों और मुगलों के राज्य के बाद भारत में स्त्रियों की स्थिति में और गिरावट आई। चौदहवीं, पंद्रहवीं शताब्दियों में हिन्दू-मुसलमानों में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आदान-प्रदान हुआ । जाति-पाति के बंधन कठोर होने से स्त्रियों को सामाजिक बंधनों में जकड़ दिया गया । औरतों की दृष्टी से यह काल बहोत खराब रहा। विलासी मुस्लिम अधिकारियों की लोलुप रसिकता से रक्षा पाने के लिए हिन्दू समाज में पर्दे का तथा बालविवाह का प्रचलन हुआ । लड़कियों की शिक्षा एकदम समाप्त हो गई। सती प्रथा चरम सीमा तक पहुंच गई। विधवा विवाह नीची जातियों के अतिरिक्त सभी मध्य व ऊँचे वर्गों में बुरा माना जाने लगा । निम्न वर्ग की स्त्रियाँ ही केवल नौकरी करती थी। स्त्रियों के समस्त अधिकार छीन लिये गये उनकी स्वतंत्रता नाममात्र को रह गई । शासक वर्ग लुटे हुए अपार धन से ऐश्वर्य और विलास में उन्मत्त था । पडदा पध्दत की शुरूवात इस काल में हुयी। औरतों को जबरदस्ती भगा ले जाने के कारण उनका जीवन ज्यादा असुरक्षीत हो गया। जीस के कारण समाज में अनेक कुप्रथाओं का जन्म हुआ । नारी उपभोग की वस्तु है, ऐसी समझ के कारण नारी को भगाकर ले जाना, बलात्कार, लुटना, अनेक पत्नी करने की प्रथा समाज में रूढ हुयी। परिणामतः समाज भी पतन्मोमुख हो गया । नारी को केवल मनोरंजन और विलासिता की सामग्री मात्र समझा गया । सामन्तीय युग की दृष्टि का प्रसार स्त्री के शारीरिक लावण्य एवं कोमलता तक ही सीमित रहा, उसकी अनुपम शक्तिसंपन्न अन्तरात्मा तक वह नहीं गयी । नारी के अनेक रूपों-गृहिणी, जनन-देवी, भगिनी आदि को भूलकर समाज नारी शरीर के सौन्दर्य-सरोवर में, सतह पर ही गोते खाता रह गया । विदेशी आक्रमणों के कारण हमारी सारी प्राचीन व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई। मध्यकालीन सीमाओं में बंधी नारी पर अशिक्षा बालविवाह, पर्दाप्रथा, सतीप्रथा जैसे बंधन उत्तर व मध्य भारत में विदेशी आक्रमण के बाद नारी सुरक्षा की दृष्टि से लगाये गये थे ।

ब्रिटिश काल:

भारत में ब्रिटिश राज्य के प्रभाव से तथा विदेशी भाषा, शिक्षा का माध्यम बनने से भारतीय जीवन पद्धति और राष्ट्रीय चरित्रों में नए परिवर्तन प्रारंभ हुए । शिक्षा तथा औद्योगिकता से जो विकास हुआ वह नगरों तक ही सीमित रहा। ग्रामीणों के बीच गरीबी और अज्ञानता का राज्य हो गया । भारतीय समाज एक नये प्रकार के शोषण का शिकार हुआ । पहले से ही शोषित नारी-समाज पर इसका और कुप्रभाव पड़ा। वह पददलित और पीड़ित हुआ । इसलिए समाज-सुधारकों का ध्यान पिछड़े वर्गों के साथ नारी की ओर भी केन्द्रित हुआ । स्त्रियों की सभी समस्याओं के मूल में अंधविश्वास, निरक्षरता, और अज्ञानता ही केन्द्रित थे । इसलिए राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, स्वामी दयानन्द, पंडित रमाबाई, महर्षि कर्वे, महात्मा गांधी जैसे सुधारकों ने सामाजिक सुधार के साथ-साथ स्त्री-शिक्षा की ओर भी ध्यान दिया। सती-प्रथा का उन्मूलन, बालविवाह पर प्रतिबंध, विधवा पुनर्विवाह की स्वीकृति, स्त्रियों के संपत्ति अधिकार जैसे कानून बनाकर उन्हें सामाजिक न्याय देने का प्रयत्न किया तो दूसरी ओर उन्हें शिक्षित करने के प्रबंध भी किए। परंतु २०वीं शताब्दी के प्रारंभ में स्त्रियों ने स्वयं इस ओर रुचि प्रदर्शित की और महिला संगठनों ने स्वयं इस कार्य को हाथ में लिया तभी स्त्रियों की उन्नति का मार्ग विकसित हुआ ।

समकालीन साहित्य में नारी के जीवन में व्याप्त घुटन, निराशा, अंधविश्वास, पीडा, दुःख, संत्रास, सामाजिक द्वंद को बखुबी से चित्रित किया गया है। विभिन्न क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति में बदलाव दिखाई दे रहा है । "साहित्य में नारी चेतना से हमारा आशय यह है कि साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज में नारी जो अशिक्षा, रुढी और अंधविश्वास के कारण शोषण का शिकार बन रहीं है। ऐसे नारी जीवन की अन्याय, अत्याचार की करुन कहानी को वाणी देना , उसे अपने

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue 60 , Vol. 1 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Oct. 2022 | SJIF | Impact Factor : 7.139

अधिकारों के प्रति जागृत करना, उसके दर्द, घुटन, पीडा, आदि को व्यक्त करना साहित्य के अंतर्गत नारी चेतना के नाम से पुकारा जाता है ।" [2] लेकिन आज के इस संगणक युग में कइ जगह नारी का शोषन और दमन होता दिखई देता है ।"नारी को पुरूष जैसा नहीं बनना है, बल्कि अपने गुणों को सुरक्षित रखते हुए अपने आप को स्थापित करना है, समाज में अपनी जगह खुद बनानी है ।"[3] समकालीन साहित्यकारोंने इस परिवेश में दिखाई देने वाले अनेक समश्याओं को कलम के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । बाल विवाह (Child Marriage), विधवा विवाह पर रोक, अंतर्जातीय विवाह पर प्रतिबंध से मुक्त‍ि , पडदा पध्दति का विरोध, बहुपत्नी विवाह का विरोध, कन्या वध (बेटि को जन्म के बाद मारणा) का विरोध, दहेज प्रथा का विरोध ,सती प्रथा का विरोध , देवदासी प्रथा का विरोध, वेश्या वृत्त‍ि का विरोध,तलाक का विरोध, असमानता का विरोध आदि समस्याओं पर समकालिन साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलाई है ।

हिंदी की प्रमुख समकालीन कहानी लेखिकाओं में राजी सेठ,मंजुल भगत नासिरा शर्मा, चंद्रकांता,अल्पना मिश्र, मन्नू भंडारी, ममता कालिया, शशीप्रभा शास्त्री, सूर्यबाला दीप्ति खंडेलवाल, मृदुला गर्ग, कुसुम गुप्ता ,आभा गुप्ता, चित्रा मुद्गल, स्नेह मोहनीश, प्रतिभा राय, सिम्मी हर्षिता, ऋता शुक्ल, कनकलता,मालती जोशी, सुधा अरोड़ा, रश्मि कुमारी, उर्मिला शिरीष, उषा प्रियवंदा, कृष्णा सोबती, तसलीमा नसरीन, मेहरुन्निसा परवेज आदि है । इनकी कई कहानीयों में नारी के विभिन्न पहलुओं को उठाया गया है ।

मृदुला गर्ग की कहानियों में नायिकाएँ परिस्थितियों से समझौता करने के लिए मजबूर हो जाती है। इसकी विवशता वह नारी है। यही है पुरुषों की जरूरतों के अनुसार बदलना पर कभी-कभी वह इतनी बदल जाती है कि उसे किसी की जरूरत ही महसूस होना बंद हो जाता है 'वितृष्णा' ऐसी ही कहानी है कथानायिका शालिनी का पति 'दिनेश' अधिक से अधिक समय काम में व्यस्त रहता है। पत्नी शालिनी उसका साथ पाने के लिए तड़पती है। पर उसे न पति समय दे पाता है और न ही प्यार। जब वह रिटायर्ड होता है तो अकेलेपन में शालिनी का साह्चर्य पाना चाहता है तब शालिनी उसे जरूरी नहीं समझती, "वह शालिनी से पूँछना चाहता था, बीस साल पहले तुम्हें इतना कुछ कहना था उसका क्या हुआ? कहाँ खो गए वे शब्द? बिना कहे तुम्हारा मन कैसे भर गया? तब मैं कितना व्यस्त था। तुमने मुझसे पूछा था, आपके पास घंटे भर की भी फुरसत नहीं है कि बैठकर बात कर सकें तो मैंने कहा था, बात करने की फुरसत उन्हें होती है जिनके पास काम नहीं होता। अगर तुम घर को पूरे सलीके से चलाओ तो तुम्हारे पास भी चख चख करने को वक्त न बचे... तुम समझती क्यों नहीं शालिनी तब मेरे पास वक्त नहीं था। अब है। हालात बदलते रहते हैं। हालात के साथ हमें भी बदलना पड़ता है।" परंतु शालिनी को अब किसी के भी साहचर्य की आवश्यकता नहीं रहती जब उसे जरूरत थी, तब वह अकेले रहती है। मृदुला गर्ग की 'खरीदार' कहानी की नायिका आत्मनिर्भर है। कहानी में नारी के सामर्थ्यशाली व्यक्तित्व का चित्रण हुआ है। कथानायिका दहेज में बीस हजार रुपए मांगे जाने पर विवाह से इंकार कर देती है और स्वयं खरीदार बनने का संकल्प कर वह आई.ए.एस. की परीक्षा पास कर सहायक कमिश्नर से होते हुए गृह मंत्रालय की सचिव बन जाती है। आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनने में उसमें एक आत्मविश्वास आ जाता है।

राजी सेठ की कहानी 'दलदल' में स्त्री-पुरुष संबंधों में फैले तनाव को चित्रित किया गया है। सेना में कार्यरत आरती का पति अमर दुर्घटना में अपना पैर खो बैठता है। शारीरिक अपंगता के कारण सेना विभाग द्वारा उसे उच्च पद से हटाकर निम्न पद पर स्थानांतरित कर दिया जाता है, जिससे उसे मानसिक आघात पहुँचता है। यह घटना उसके पुरुषत्व को चोट पहुँचाती है। अतः वह सेना से पद त्यागकर नए कार्य की तलाश करता है। पत्नी आरती यह जानती है, कि घर में बैठे-बैठे पति दिनोंदिन उसमे कटने लगे हैं। चिड़चिड़ाहट ने घर का वातावरण दूषित कर रखा है। हाथ में नौकरी न होने के कारण उनके अहम् को चोट पहुँची हैं। अमर एक ऐसा पति है, जो पुरुषत्व की पताका लिए चलता है, जिसे संघर्ष करना पसंद है, लेकिन पत्नी की मदद मे मिली नौकरी किसी भी हालत में स्वीकार्य नहीं। इसी मानसिक रोग से ग्रसित अमर की गृहस्थी में तनाव ने पैर पसारने शुरू कर दिए। नौकरी की तलाश में वह पत्नी, बच्चे, माँ और बहन को छोड़ घर से पलायन कर जाता है। कहानी में आरती एक ऐसे दलदल में फँसी है, जहाँ वह पति अमर को अहम्वादी सोच से बाहर नहीं निकाल पाती। वह पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण नौकरी भी नहीं छोड़ सकती। पति समझने को तैयार ही नहीं वरन् पति के मन में ना-ना तरह के संदेहों ने जगह बनानी शुरू कर दी है।

मंजुल भगत की 'अजूबा' कहानी में नेहा और निशीथ के जीवन के दुराव को दिखाने का प्रयास किया गया है। निशीथ माँ का इकलौता लाड़ला बेटा है। माँ के ममत्व ने निशीथ पर अतिक्रमण कर रखा है। ममत्व की मिठास में निशीथ नेहा का कभी नहीं हो पाता है। सात फेरों पर टिका बंधन कचहरी की टेबल पर तलाक लेकर दम तोड़ने को विवश हो जाता है। पति-पत्नी के बीच अनकहे दुराव ने इस रिश्ते का दम घोट दिया। यह संबंध ममत्व की बलिवेदी पर ही आकर स्वयं अपने अस्तित्व को समाप्त कर देता है, परंतु नेहा अपने आस-पास बिखरे इस पतझड़ मे जुड़ी रहना चाहती है और कहती हैं, "मैं अपनी जिंदगी को पत्तों के सहारे सजाऊँगी, रहने दो इन पत्तों को मेरे जीवन में क्यों बटोरते हो ? क्यों काँटों में मेरी मुस्कराहटें देखना चाहते हो ?" वर्तमान समाज में कई सुंदर दांपत्य संबंध इसी प्रकार दम तोड़ रहे है, जिसके कारण समाज में तलाक के मामले बढ़ते नज़र आ रहें हैं, जिसके सामंजस्य का मूल में अभाव है। भारतीय नारी पति द्वारा छोड़े जाने पर भी संबंधों से दूर नहीं हो पाती है, यह उसकी विवशता है या सामाजिक दृष्टिकोण। यह प्रश्न विचारणीय है? परंपरागत मध्यमवर्गीय परिवारों में अधिकांशतः इन्हीं अवस्थाओं में दांपत्य संबंधों का अंत होता रहा है। यह कहानी समाज के उस प्रतिबिंब को ही उजागर करती है।

नासिरा शर्मा 'बंद दरवाजा' कहानी में परंपरागत रूढ़िवादी समाज के प्रभाव को चित्रित किया है, जहाँ मान के नाम पर बढ़ते अहम् की भावना दो परिवारों को तोड़कर रख देती हैं। काजिम और शबाना बचपन के मित्र हैं। बढ़ती उम्र के साथ दोनों परिवारों ने आपसी सहमति के साथ इस मित्रता को संबंधों में परिवर्तित कर दिया। विवाह के अवसर पर काजिम के पिता एवं शबाना के पिता के मध्य कुछ बातों पर टकराव हो जाने पर संबंधों में अहम् ने घुसपैठ कर ली। विवाह तो हो गया, लेकिन काजिम और शबाना एक न हो सके। रईस मिर्जा एवं मीर साहब के मध्य बढ़ता तनाव काजिम और शबाना के विलग होने का कारण बन जाता है। शबाना अपने घर रहती है और काजिम अपने घर। दोनों न एक-दूसरे मे मिल सकते हैं, न ही साथ रह सकते हैं। अपने प्रेम से दूर रहने के कारण शबाना धीरे-धीरे बीमार होने लगी और यह बीमारी कब उसे मौत की गोद में ले डूबी, किसी को पता ही नहीं लगा। शबाना की मौत पर काजिम के लिए उस घर के बंद दरवाजे खुले, लेकिन वह शबाना को देखने नहीं गया। काजिम का कहना था, कि जब वह जीवित थी अगर तब मैं उससे मिल न सका तो मौत के बाद मिलकर क्या करूँगा ? जिन दहलीज़ों के कारण वह अपनी पत्नी को न बचा सका, अब उन्हें पार कर जाने का क्या फायदा ? कहानी के माध्यम से नासिरा जी ने काज़िम और शबाना की तड़प का चित्रण किया है, जिसे घरवाले समझ नहीं पाए। अपनी खोखली जिद के आगे एक प्रेमी युगल विछोह के लिए विवश हो जाता है। आदर्शवादी काजिम चाहकर भी इन परंपराओं का विरोध नहीं कर पाता है और धीरे-धीरे बढ़ता मौन निराशा के गहरे अंधकार में उतर जाता है।

'एक लड़की शिल्पी' में चंद्रकांता जी ने परंपरागत दायरों से हटकर नारी के अस्तित्ववादी विचारों को दिखाया है। श्रीमती सराफ बेटे की चाहत में पाँच बेटियों को जन्म दे चुकी थीं। उम्र के बढ़ने के साथ श्री और श्रीमती सराफ द्वारा चार बेटियों का कन्यादान सफलतापूर्वक किया गया। पाँचवीं बेटी शिल्पी पर उन्हें बेहद गर्व था। पढ़ी-लिखी बेटी शिल्पी अपने पैरों पर खड़ी हो चुकी थी। वह अपनी एक स्वच्छंद विचारधारा रखती थी। माता-पिता के आग्रह करने पर भी वह विवाह के लिए तैयार न थी। शहर में रहने वाली यह सुशिक्षित युवती अमितकुमार जैसे धोखेबाज़ व्यक्ति के षड्यंत्र का शिकार हो जाती है और उससे प्रेम करने लगती है। प्रेम का यह पागलपन मर्यादाओं की सीमाओं को भी लाँघ चुका था, जिस पर माता-पिता एवं सगे- संबंधियों द्वारा आपत्ति उठाई गई। शिल्पी इस संबंध को सम्मानजनक स्थान देने के लिए अमित के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखती है। वह उसे बेहद चालाकी के साथ साफ इन्कार कर देता है और डॉ. सुलक्षणा राव से विवाह का निर्णय कर लेता है। शिल्पी को यह ज्ञात होते ही वह उसे अपनी जिंदगी से निकाल फेंकती है। अंत में में वसंत मिश्रा जैसे शिक्षित युवक के साथ विवाह करने का निर्णय लेती है, जिसे शिल्पी के अतीत से कोई सरोकार नहीं है, जो वर्तमान से भविष्य की यात्रा करना चाहता है, न कि बीते अतीत से। वसंत का मानना है, कि हर व्यक्ति का एक अतीत होता है लेकिन जीवन जीने के लिए अतीत को भूल वर्तमान में जीने का प्रयास करना चाहिए। दोनों के विवाह की खबर से माता-पिता चैन की साँस लेते हैं। शिल्पी अमित को जीवन से निकाल वसंत के साथ सुखद गृहस्थी की नींव रखती है।

मन्नु भंडारी की कहानी 'स्त्री सुबोधिनी' में मन्नू जी ने स्त्री-पुरुष के संबंधों की नवीन व्याख्या की है, जहाँ नारी स्वतंत्रत तो चाहती हैं लेकिन पुरुष उसकी स्वतंत्रता का उपयोग बड़ी कुशलता से कर नारी को छलता चला जाता है। कहानी की मुख्

PRINCIPAL

नायिका अपने पैरों पर खड़ी होने के लिए दफ्तर में कार्य करती है, जहाँ वह अपने उच्चाधिकारी शिंदे के प्रेम जाल में फँस जाती है। शिंदे द्वारा बिछाए गए जाल में कभी कविता के माध्यम से, तो कभी पत्रों के माध्यम से फँसती चली गई। उसे यह ज्ञात ही नहीं कि शिंदे विवाहित है एवं पत्नी गर्भवती है। दोनों की बढ़ती मैत्री अंतरंग संबंधों तक पहुँच जाती है। कहानी की नायिका शिंदे से विवाह करके संबंध को एक नाम देना चाहती है, लेकिन शिंदे अपनी मीठी बातों में उसे फँसाकर सदैव टालते रहता है। हर बार वह शब्दों का जाल बुनकर कहानी की नायिका को फँसाता चला गया और खुद को बचाता चला गया। जीवन के वास्तविक सत्य से परिचित होने पर कहानी की नायिका समझ जाती है, कि वह शिंदे के लिए मात्र एक इच्छानुसार उपयोग की वस्तु है। अंत मे वह इस गर्त से निकलती है।

अंततोगात्वा कहा जा सकता है कि समकालीन सामाजिक परिवेश में भारतीय संविधान में कितने भी नियम बनाये गये है लेकिन समाज में आज कई जगह पुरानी मानसिकता को लेकर जिनेवाले लोग है। अन्याय और विषमता से पीडित समाज में हमेशा से नारी को ही प्रताडित किया गया है। समाज मे पुरुष प्रधान व्यवस्था के कारण संघर्ष होता रहा है। नारी इस मानसिकता से निकलकर अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए संघर्ष करती नजर आती है। इसी का ज्वलं त उदाहरण वर्तमान दौर में हिंदी साहित्य में चल रहे स्त्री-विमर्श हैं। स्त्री-विमर्श जितना पुरुषवादी व्यवस्था, सामाजिक परंपरा, कुप्रथा, शोषणकारी व्यवस्था, दमनकारी षडयंत्र, अपनी गुलामी आदि पर अपने कथा साहित्य के द्वारा विरोध कर एक नई स्त्री-पुरुष समानतावादी समाज व्यवस्था लाने के लिए जो लड़ाई लड़ रहा है, उसका सबसे सशक्त हत्यारा भाषा के माध्यम से साहित्य है। समकालीन हिन्दी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में नारी मुक्ति की अवधारणा को ध्यान में रखकर जो विचार व्यक्त किए हैं वे 'स्त्री विमर्श' के अन्तर्गत आते हैं। पुरुष प्रधान समाज में नारी की स्थिति दर्शाने के प्रयास उपन्यासों एवं कहानियों में बराबर होते आए हैं, किन्तु कुछ वर्षो से इसकी चर्चा अधिक होने लगी है विशेष रूप से कुछ नारी लेखकों के इस दिशा में विशेष प्रयास किये दिखाई देते हैं।

संदर्भ -

1. माहेश्वरी शैलजा, हिन्दी व्यंग्य साहित्य में नारी, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 1997 पृ. 47
2. वसाणी कृष्णावंती,दशवे दशक के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी चेतना, पी. जागृति प्रकाशन, कानपुर पृ. 15

वर्मा मृदुला, प्रथम दशक के महिला लेखन में स्त्री विमर्, विद्या प्रकाशन, कानपुर पृ. 31